चुटकुले

कु. धर्मेश हंस
केन्द्रीय विद्यालय, रूड़की

एक गुण्डा - अबे सारा पैसा निकाल, नहीं तो एक घूँसा मारूंगा तो बम्बई पहुँचेगा ।
आदमी - जरा धीरे से मारना, मुझे तो नागपुर तक ही जाना है ।

डाकू - ऐ सेठ, जान देता है या माल ।
सेठ - अरे भईया, जान ही ले जाओ । माल तो बुढ़ापे में काम आएगा ।

सिपाही - मिस्टर.... साइकिल रोको.... इसमें लाईट नहीं है ।
साइकिल सवार - हवालदार साहब, सामने से हट जाओ इसमें ब्रेक भी नहीं है ।

माँ - बेटे तुम अब तक कहाँ थे ।
बेटा - माँ मैं फिल्म देखने गया था - माँ का प्यार ।
माँ - अच्छा बेटा, अब ऊपर जाकर देखो- बाप की मार ।

****

रिश्वत खोरी

यहाँ-वहाँ, जहाँ-तहाँ, मत पूछो कहाँ-कहाँ ।
है बैठे रिश्वतखोरी, करते हैं वो ये काम चोरी-चोरी।
शराफत की रोटी नहीं वो खाते,
रिश्वत के पैसों से वो एश उड़ाते।
चाहे वो नेता हो या डॉक्टर,
हो वकील चाहे, तो इंस्पैक्टर,
नहीं आती इन्हें समझ शराफत की भाषा
काम यदि करवाना हो तो,
रिश्वत देकर इन्हें समझाना,
अमीर लोग तो रिश्वत देकर, अपना काम करवा लेते हैं,
और बेचारे गरीब लोग, इसकी सजा भुगतते हैं,
जब तक बंद ना होगा, रिश्वत देने का धंधा,
तब तक यूँ ही इंसाफ के लिए तरसेगी दुनिया ।